पात्र-परिचय

पुरुष

१	सूत्रधार	नट, नाटकक निर्देशक ।
२	कंसासुर	दैत्य, मथुराक राजा ।
३	दौवारिक	कंसक द्वारपाल, प्रतीहार ।
४	धात्रंश	नारद मुनि ।
५	वसुदेव	श्रीकृष्णक पिता ।
६	श्रीकृष्ण	परमेश्वर, वसुदेवक पुत्र ।
७	नर्त्तकगण	नटुआ सभ ।



स्त्री

१	नटी	सूत्रधारक पत्नी ।
२	देवकी	श्रीकृष्णक माए, कंसक बहिनि ।



सुकवि श्रीकान्त विरचित

॥ श्रीकृष्णजन्म - रहस्य - नाटकम् ॥

सुरेन्द्ररक्षणातिदक्ष-खण्डितारिपक्ष-लक्ष-
[1]रक्षित-स्वभक्त-पक्ष बाहुवल्लि-धारिणी ।
हरार्धदेहधारिणी स्वभक्त-भव्यकारिणी
मुनीन्द्रवृन्दतारिणी सदा तनोतु वो मुदम् ॥१॥

([2]तमेवार्थं द्रढयति । मालवरागे गीतम्—१)

जय जय भगवति जय[3] भवसारम् ।
तव[4] पदमेव भजाम उदारम् ॥
करतल—कृत—करवाल—विशाले ।
नव - शशि - भूषित सुललित भाले ॥
समर शमित रिपु निकर कराले ।
चण्ड-मुण्ड खण्डित[5]—जयमाले ॥

श्रीकृष्णजन्मरहस्यनाटकक व्याख्या

देवराजक रक्षाकरबा मे अत्यन्त पटु, लाखो शत्रुक सैन्यकें कटबा मे ओ लाखो अपन भक्तगणक रक्षाकरबा मे सिद्ध बाहुरूपी लतीकें धारण कएनिहारि, महादेवक आधादेह कें धारण कएनिहारि, सुन्दर भक्तक कल्याण कएनिहारि, मुनिराज लोकनिक कृतकृत्य करएवाली भगवती सतत अहाँसभक आनन्द कें बढ़ाबथु ॥१॥

(ओही अर्थकें पुष्ट करैत छथि । मालवरागक गीत—१)

हे भगवती ! अहाँक जय हो । अहाँक पएर जे संसारक सारस्वरूप(तत्व) थिक ओ उदार अछि तकर हमरालोकनि भजन करैत छी । अहाँ हाथ मे

1- रक्षितस्वभक्त । २ तमेवार्थं द्रढयति । ३—जय जगदम्बे । ४—तव पद मोर परम हित सम्बे । ५—खण्डन ।

भुजग विभूषित लोहित—वसने ।
विकट-दशन लम्बित-वर-रसने ॥
सजल-जलद इव पूरित - तारे ।
वहसि कलित शत मणिमय हारे ॥
सुकवि गणक इह गायति गीतम् ।
तव चरणे मानसमुपनीतम् ॥

(अपि च श्लोकः)—

विघ्नध्वान्ताऽतिगाढप्रहरणविषये चण्डमार्तण्डखण्डः
[6]प्रोद्भूताघव्रजौघ-प्रचरणगहने दारुणो दाववह्निः ।
स्वर्गाधीशाद्यधाम-प्रणमितचरणः [7]शैववंशाब्धिहंसः
स्फूर्जच्चन्द्रावतंसः [8]स्वनयतु कुशलं विघ्नराजो गणेशः ॥२॥

विशाल तरुआरि रखने छी । अहांक कपार पर सुन्दर नवीन चन्द्रमा छथि। युद्ध मे अहां भयानक शत्रुक समूह कें शान्त करैत छी, चण्ड ओ मुण्डकें काटि विजयक माला पहिरने छी, सांप सँ शोभित लाल वस्त्र पहिरने छी, विकराल दाँत ओ नमहल जीह अछि, पानिभरल मेघ मे तारा सभ जेना भरल रहय तहिना सैयो मणिक हार कें धारण कएने छी । सुकवि गणक (ज्योतिषी कवि लाल) एहि गीतकें गबैत छथि ओ अपन मन कें अहांक चरण पर समर्पित कएने छथि ॥

(आओरो श्लोक)—

विघ्नरूपी गहन अन्हार कें मारबा मे प्रचण्ड सूर्यमण्डल, उत्पन्न भेल पापक समूहक गहन प्रचार मे दारुण दावानल (वनक अग्नि), स्वर्गक राजा इन्द्र ओ विष्णु सँ पूजित चरणवला, शिवक वंश रूपी समुद्र मे हंसक समान, चमकैत चन्द्रमाक गहनावला विघ्नक अधिपति गणेश कुशलदायक शब्द करथु ॥२॥

६—प्रोद्भूतव्रजनौघवृ.व्रजगहने दावाग्निवद्दारुणः । ७—सौरभं साब्धिहंसाः (?)। ८—सुनयतु ।

(नान्द्यन्ते)

सूत्रधारः—अलमतिविस्तरेण । (परितोऽवलोक्य) अहो ! महद्विलक्षणा रङ्ग-भूमिकाऽवलोक्यते । (पुनः स्तौति ।)—

महाप्रतापशालिनी नृपाधिपालिपालिनी
स्फुरद्गुणानुरागिका[9], विभाति रङ्गभूमिका ।
प्रिये ! विधेहि सादरं, तदत्र कौतुकं परं
महीप-कंस शासिता, सभा मुदेन भासिता ॥३॥

(ततः प्रविश्य नटी वदति ।)

नटी—वन्दामि अज्जउत्तं[10] । अज्जउत्त ! एसा संविता [11]आअदह्मि । यधाणवेदि अज्जो । [वन्दे आर्यपुत्रम् । आर्यपुत्र ! एषा संवृत्ता आगतास्मि । यथाज्ञापयति आर्यः ।]

सू०—प्रिये ! एषा कंसमहाराजस्य महती सभा । अत्र निजगुणान् सन्दर्शय । [12]अष्टपात्र - प्रवेशकेन नृत्येन राजानमनुरञ्जय—

(नान्दीपद्यक बाद)

सूत्र०—विशेष विस्तार उचित नहि । (चारूकार देखि) अहो ! अत्यन्त विलक्षण रङ्गमञ्च देखि पड़ैछ । (फेर स्तुति करैत छथि)—

महान् प्रताप सँ युक्त, राजाधिराजक द्वारा सम्पोषित, प्रकाशित गुणक अनुराग भरल ई नाट्यपरिषद् शोभित भए रहल अछि । तेँ हे प्रिये! एतए आदरपूर्वक अत्यन्त रोचक अभिनय प्रस्तुत करु, किएक तँ ई राजा कंसक द्वारा शासित सभा आनन्द सँ परिपूर्ण अछि ।)

(तखन प्रवेश कए नटी बजैत छथि ।)

नटी—आर्यपुत्र कें प्रणाम करैत छी । आर्यपुत्र ! इयेह तैयार भए आएलि छी । जे आर्यक आज्ञा हो ।

सूत्र०—प्रिये ! ई कंसमहाराजक पैघ सभा थिक । एतय अपन गुणसभकें प्रदर्शित करु । आठ पात्रक प्रवेश वला नृत्य सँ राजाकें प्रसन्न करु:—

९—गुणानुरागिका । १०—वत्स ! । ११ - आअवहिमय धाणवेति । १२-अष्टौ ।

(दोहा)—

हमे[१३] नट मारिष, तूँ नटी, ऋषि नारद, कंस भूप ।
वसुदेव, देवकि, भरथगण, मोहन ब्रह्मस्वरूप ॥१॥

(ततो नटी नेपथ्ये उपविश्य सकल-मङ्गल-पदा-योजितं[१४] गीतं गायति ।)

(नान्दी आसावरी-रागे [गीतसं०--२]

जय [जय मङ्गल] देषु विघनेशे ।
करिवर मुख दुख हरथु गणेशे ॥
आपद - तिमिर तरनि - अवतारे ।
[१५]पातक गहन दहन अन्धकारे ॥
विघन मुदित जनि मारुत लोले ।
गलित सघन मद लसित कपोले ॥
सुरनायक - मुनि - सेवक चरने ।
निज - गन - जन मन [१६]कालुष हरने ॥

हम अभिनेता सूत्रधार रहब, अहाँ नटी, नारद मुनि, राजा कंस, वसुदेव देवकी, नर्त्तक सभ ओ ब्रह्मस्वरूप श्रीकृष्ण ॥१॥

(तखन नटी नेपथ्य मे बैसि सभ मङ्गल पद सँ युक्त गीत गबैत छथि)—

(नान्दी आसावरी रागमे गीतसं०—२)

विघ्नेशे = विघ्नक राजा गणेश । करिवरमुख = हाथीक मुँह वला । आपद""" = विपत्तिरूपी अन्धकारक हेतु सूर्यक अवतार । पातक """" = गहन पापक हेतु आगि । विघन = विघ्न वा विशिष्ट घन (मेघ) । मारुत लोले = चञ्चल वायु (विघ्नस्वरूप मेघ कें उधिअएबा मे) । गलित ""..."

---

[१३] - हमें ।

[१४]--पदमायोजितं । [१५]—पातु खगहनदहन । [१६]—कलुष ।

थुति त्रिभुवनपति हम तुअ दासे ।
अनुपल पूरिअ अभिमत आसे ॥
सुकवि गणक भन सुनि उपदेसे
सकल सभा शुभ करथ गणेशे ॥

कंसासुर—:(आकर्ण्य) अहो ! महद्गुणयाणीव लक्ष्यते ।

(इति श्रुत्वा उपसृत्य नर्त्तकाः कथयन्ति ।)

नर्त्तकाः—[१७]जय महाभाग महाराज !

कंसासुरः—विलाससहितं नृत्यं कुरु ।

(नर्त्तकास्तथा कुर्वन्ति ।)

(काचित् प्रफुल्लारविन्दवदना कमपि मनोहरं निजतनुजसुखं दास्यामीत्युक्तवती इदानीं नाऽङ्गीकरोति । तत्र कापि सखी तां मधुकर-मालती-व्याजेन कथयति)

(श्लोकः)—

= सतत चूबैत मद (हाथीक भट्ठी) सँ शोभित गालवला । सुरनायक"""— = इन्द्र ओ मुनिसभ चरणक सेवक छथि। निज "" = अपन भक्त सभक मनक दुःख हरण करैत छथि ।।

कंसासुर—(सुनि) अहो ! महान् गुण सँ युक्त वाणी अहाँ बुझाइछ ।

(ई सुनि नर्त्तकसभ लग जाए कहैत अछि ।)

नर्त्तकसभ—जय महाभाग्य महाराज !

कंसासुर—विलासयुक्त नृत्य करहु ।

(नर्त्तक सभ तहिना करैछ ।)

केओ फुलाएल कमल सन मुँहवाली कोनो पुरुष कें 'सुन्दर अपन देहसँ उत्पन्न सुख देब' ई गछने छलि, मुदा एखन नहि स्वीकार करैछ, ततए केओ सखी ओकरा भौँरा ओ मालतीक व्याजें कहैत छैक । श्लोक–)

---

[१७] - महभाग (?) ।

नो पीतं मधुपेन पङ्कजदले, नो वा कदम्बद्रुमे
[18]मारन्दं न दृशापि वीक्षितमथ प्रौढाभिमाने सति ।
त्वामेकं बहुचिन्तयन्ननुपमस्तन्नैव चेत् तोष्यसे
कोऽन्यस्तस्य मधुव्रतस्य शरणं, कस्त्वद्गुणग्राहकः ॥४॥

(श्लोकार्थे गीतम्--३)

मधुकरमनुनय [19]मालति ! मनसिज-सुखमपहाय[20] ।
गायति तव गुण-गौरवमनुपममखिलसुखाय[21] ॥
अवधारय मधुचञ्चलमतनु - मानहृदयेन ।
व्रज मधुसूदनमधि खलु, विरहिण मह[22] सरसेन ॥
अधिकतरगिरसदायिनि ! सकल-कला-चतुरेषु ।
[23]गुणवति ! भज भवभूषणमविकारं[24] भ्रमरेषु ॥

भौंरा, ने कमलक पत्ती पर आ ने कदम्बक गाछे पर पराग पिबलक, ने फूलक रस कें आँखियो सँ देखलक। उत्कट अभिलाषा भेला पर केवल तोहरहि बहुतप्रकारें चिन्तन करैत अएलह अछि। हे मालती! ओकरा जँ सन्तुष्ट नहि करैत छह तँ ओ मधुव्रत भौंराक आन के शरण होयतैक आ तोहरो गुणक ग्रहण कएनिहार दोसर के होएतह ? ॥४॥

(श्लोकक अर्थ मे गीत—३)

हे मालती! तों कामसुख कें छोड़ि भौंराकें मनाबह । ओ हरदम तोहर गुण तथा गौरबके सकल सुखक हेतु गबैत छह। अपन देहक मान सँ रहित हृदय सँ ओहि मधुक प्रति चञ्चल भौंरा कें चिन्हह। एतय ओहि विरही मधुसूदनक लग सरसता सँ जाह। हे अधिक रस देबयवाली! सकल कलामे चतुर भ्रमरसभ मे विकार रहित तोहर वशीभूत जे तोहर ई संसारक

[25]आलोकय तिलशालिनि ! सपदि सदा नयनेन ।
[26]स्वहृदि निधाय समागममनुसर तं शयनेन ॥
कुरु विकसितमतिसुन्दरमाननमधिकसुखेन ।
भवति विलासिनि ! हितमिह गणक-ललित-वचनेन ॥

कंसासुरः—(विहस्य शिरःकम्पं विधाय) साधु, साधु !!
(इत्यङ्गुरीयकं नर्तकाय ददाति ।)
(नर्तकः सादरं गृह्णाति गृहीत्वा च प्रचलितः ।)
(इति निष्क्रान्ताः सर्वे ।)
[इति प्रस्तावना]
(अत्रान्तरे प्रविशति धात्रंशः)

(देशीयरागे गीतम्--४)

अएलहुँ देवसमाज सँ आज ।
कंस महीपति मीलन काज ॥

भूषणस्वरूप भ्रमर तकर समीप हे गुणवती! तों जाह। हे तिलवाली! झटदए अपना हृदयमे ओकरा राखि अपना आँखि सँ देखह ओ ओकरा सङ्ग समागम ओ शयनक हेतु जाह। अत्यन्त सुन्दर अपन मुँह कें सुख सँ विकसित करह। हे विलासिनी! सुकवि गणकक सुन्दर एहि वचन सँ एतए हित होइत छैक ॥
कंसासुर -(हँसि मुड़ी झुलाए) वाह ! वाह !! (नटुआकें औंठी दैत छथि ।)
(नटुआ आदरपूर्वक लैत अछि ओ लए विदाभए गेल ।)
(सभ बहार भए गेल ।)
[इति प्रस्तावना]
(एही बीच नारद प्रवेश करैत छथि ।)
(देशी राग मे गीत—४)
धवल = उज्जर । उदर = पेट मे । वन्द = वन्दना करैछ । विहिक·····

धवल केश झोकारल गात ।
उदर नटीक सुनल बात ।
नगर झगड़ जे जन डार ।
ता सओं उपज प्रेम अपार ॥
तीनहुँ भुवन के नहि बन्द ।
बिहिक कुल-पयोनिधि-चन्द ॥
नारद सब कला बिसराम ।
भनए गणक गुणक धाम ॥

दौवारिकः—(प्रविश्य[27]) कः कोऽत्र ? (परिक्रम्य) को भवान् ?
धात्रंशः—रे मूढ़ दौवारिक ! न मां जानासि ? अहं ब्रह्मर्षि नारदः ।
दौवारिकः—(ससम्भ्रमम्) भअवं ! णमो दे । [भगवन् ! नमस्ते ।]
धात्रंशः—[28]तवासदृशफलमस्तु । (इत्युक्त्वा प्रचलितः । [29]कंसासुराय दत्तं चाशीर्वादं पद्येन)—

जटाजूट-मध्ये लसद्देवधारा
[30]स्फुरद्धेमवर्णा च मुक्तानुकारा ।

= विधाताक कुलरूपी समुद्र सँ उत्पन्न चन्द्रमा थिकहुँ । कला बिसराम = सभ कलाक निवासस्थान ॥
द्वारपाल—(प्रवेशकए) एतए के के अछि ? (टहलि) अपने के थिकहुँ ?
नारद—रे मूर्ख द्वारपाल ! हमरा नहि जनैत छें ? हम ब्रह्मर्षि नारद थिकहुँ ।
द्वार०—(हड़बड़ाए) भगवन् ! अहाँके प्रणाम करैत छी ।
नारद—तोहरा अनुरूप फल होअओ । (ई कहि चलि देलनि । कंसासुरकेँ देल आशीर्वाद पद्यक द्वारा)—
महादेवक जटाजूटक बीच मे शोभित गङ्गा, चमकैत सोनाक समान तथा मोतीक समान (चन्द्रकला), अङ्ग मे निवास करैत उद्देश्यपूर्वक

---

२७ = परिक्रम्य (आगू-'परिक्रम्य'क स्थान मे प्रविश्य' ।)
२८ = तवानासदृश । २९ - कंसा-सुरं । ३० = स्फुरद्धेमवर्णाञ्च ।

[31]भवानीयमुद्दिश्य चाङ्गे वसन्ती
सदा पातु शम्भोः कृपायुक्तदृष्टिः ॥४॥

कंसासुरः—(ससम्भ्रमम् अर्घ्यं पादार्घ्यं च कृत्वा[32]) मुने ! स्वागतं भवतः ।
धात्रंशः—साम्प्रतं भवदालोकनेन,

अदबुद एक सुनल हमे असर, मन भेल परम थिराये ।
देवकि-तनय तह कंस महीपति ! मन्द ! तोहर परिनामे ॥२॥

कंसासुरः—(सविस्मयम्) मुने ! तर्हि किं कर्तव्यम् ?
धात्रंशः—

सावधान भए रहिअ से निक थिक, एखनहि करिअ उपाए ।
नहि तञो फेरि पुनु, परत नृपति सुनु, गरुअ पराभव आए ॥३॥

कंसासुरः—(स्वगतम्) सम्यगेवोच्यते । भद्रम् एतस्य प्रकारं करिष्यामि अहम् ।
धात्रंशः—(पुनः कथयति)—

ई भवानी ओ कृपासँ युक्त दृष्टि सतत रक्षा करओ ॥४॥
कंसासुर—(हड़बड़ाए मुँह धोबाक जल ओ पएर धोबाक जल उपस्थित करैत) मुने ! अहाँक स्वागत करैत छी ।
नारद—एखन अहाँकेँ देखला सँ,
कोनो अवसर पर हम एक अद्भुत घनटा सुनल जाहि सँ मन स्तब्ध रहि गेल । हे मूर्ख कंस देवकीक बेटा सँ तोहर अन्त होएतहु ॥२
कंसासुर—(चकित होइत) मुने ! तखन की करबाक चाही ?
नारद—सावधान रहबे नीक, एखनहि प्रतीकार करू । नहि तँ बाद मे बड़ पैघ (गरुअ) दुःख आबि खसत ॥३॥
कंसासुर—(मनहि मन) ठीके कहैत छथि । नीक जकाँ एकर हम प्रतीकार करब ।

---

३१ = भवानी (नी स ?) मुद्दिश्य । ३२ = कृत्वा प्रोक्तं च ।

सबतहु बड़ धिक पिअ [निअ] जीवन, ताहि करिअ अनुमान ।
दिढ़ भए दए मन, करब तोहर[जत] मन भल देख निदान ।।४।।

कंसासुरः—एवम् । अत्र कः सन्देहः ?

नारद-वचन चिन्ति[33] निअ मानस, कंस कहल इह बात ।
जे जे अपत होएत देवकि कां, तकर करब हमे घात ।।५।।

धार्त्तराष्ट्रः—(साट्टहासम्) मदभिलषितमेवोक्तम् । अवश्यं तत् कर्त्तव्यम् । (इति निष्क्रान्तः ।)

कंसासुरः—([34]सविस्मयमन्तःपुरमागत्य मनस्येव विचार्य झटिति बहि र्भूत्वा प्रतीहारान् आहूय आज्ञापयति) भोः प्रतीहार! देवकी-वसुदेवौ कारागारं नीत्वा सयत्नतया रक्षणीयौ।

प्रतीहारः—[35]जं देओ आणवेदि । [यद्देव आज्ञापयति ।] (इति निष्क्रम्य प्रचलितः ।)

नारद—(फेर कहैत छथि)—सबसँ पैघ अपन जीवन थिक, तकर विचार करू तें स्थिर भए मन दए अपन परिचारक सभ कें सतर्क करू, जाहिसँ उचित प्रतीकार भए सकए ।।४।।

कंसासुर—बेस । एहि मे कोन सन्देह ?

नारदक वचन कें अपना मन मे विचारि कंस कहलनि जे देवकीकें जे जे सन्तान होएतनि तकरा हम मारि देब ।।५।।

नारद—(ठहाका मारि) हमर इच्छा जएह छल सएह कहलहुँ अछि । अवश्य से करू (बहार भेलाह)

कंसासुर—(विस्मय करैत अपन ड्योढ़ी आबि मनहि मन विचारि झट दए बाहर भए द्वारपालसभ कें बजाए आज्ञा दैत छथि) हओ द्वारपाल! देवकी ओ वसुदेव कें जहल लए जाए नीक जकाँ राखह ।

द्वारपाल—जे सरकार आज्ञा देथि । (बहार भए चल गेल ।)

---

३३ = चिन्तनीय मानस । ३४ = सविस्मयमनाः पुरमागत्य मनस्येवार्य झटिति ।

(एतच्छ्रुत्वा देवकी निःश्वस्य कथयति ।)

(करुणा-मालव-रागे गीतम्—५)

[36]भाइ ! कह कि कएल हमे तोर ।।ध्रुवम्।।

तात-मातु मोहि, सोपि देलक तोहि,
पिशुन-बचन होअ भोर ।
एत दिन एह छल, तोहइँ करह भल,
करुणा तेजलहु मोर ।।
धिकहुँ सहोदर, तेहुँ दया कर,
किए बाँधि देल बनिसार ।
तोहर बहिनि भए, ओतहि रहब गए,
एकरो करह विचार ।।
हित अनहित भेल, कुजन कुमति देल,
[37]इ बुझल दिन भेल वाम ।
विहिक लिखल जे, अबस होएत से,
रहत कथा परिनाम ।।
जाहितह दस हुंस, से किए करह कंस,
मोहि नहि सहि दुखभार ।
सुकवि गणक भन, धर धैरज मन,
सहनहि तह परकार ।।

(ई सुनि देवकी निःश्वास लए कहैत छथि ।)

(करुणा मालव रागमे गीत—५)

तात मातु = बाप माए । सोपि = समर्पित । पिशुन बचन = दुर्जनक वचन सँ । भोर = अज्ञानी । भल = तोंहीं हित करैत छलह । करुणा = दया । बनिसार = बन्दीशाला, जेल । हित अनहित = जे हित छल जे ‹ हित भए गेल । कुजन = दुर्जन । वाम = विपरीत । विहिक = विधाताक । अबस = अवश्य । कथा = दुर्यशक अपवाद । जाहितह = जाहि सँ । सहनहिं तह = सहले सँ ।।

---

३६ = भइबो । ३६ = भाइ कह कह कि कैल मे तोर ।
३७ = ई बूझल । ३८ = वसुदेव-देवक्यौ सम्यं शासनशाली ।

कंसासुरः—(सक्रोधम्) रे मूढ़ प्रतीहार ! सत्वरं गच्छ ।

(ततः प्रतीहारः सकरुणं वसुदेव-देवकीभ्यां[३८] समं शासनशालां प्रति गमनं चकार ।)

इति श्रीश्रीकान्त- विरचितो देवक्याः कंसजनित- विस्मयो नाम प्रथमोऽङ्कः ॥

अथ द्वितीयोऽङ्कः

(प्रस्तावना)

(पुन र्नेपथ्ये षड्गर्भ-संव्यथतहृदया देवकी प्रविश्य निःश्वस्य कथयति)—

(गौडीमालवरागे गीतम्--६)

वसुदेव-देवकी देल परवेस ।
निअर सिअर विभु दुसह कलेस ॥

कंसासुर—(क्रोधपूर्वक) रे मूर्ख द्वारपाल ! जल्दी जो ।

(तखन द्वारपाल दुःखपूर्वक वसुदेव ओ देवकीक संग जेल दिस विदा भेल ।)

इति 'श्रीकान्त'क बनाओल श्रीकृष्णजन्मरहस्यमे 'देवकीक कंसक द्वारा आश्चर्यित होएब' नामक पहिल अङ्क समाप्त भेल ॥

द्वितीय अङ्क

(प्रस्तावना)

(फेर नेपथ्य मे छओ गर्भ सँ पीड़ित हृदयवाली देवकी प्रवेश कए निःश्वास लए कहैत छथि)—

(गौड़ी-मालवरागमे गीत—६)

निअर = निगड़ (हथकड़ी) । सिअर = ...(अस्पष्ट) । विभु =

निमगन आपद अवधि पराण ।
अचिर न एहि तओ देखिअ तरान ॥
प्रसव-वेदन सहि होइअ हरान ।
निकरुन निक नहि धएल धेआन ॥
सञ्चिअ गर्भ कएल कत आस ।
उतपति कालहि कएल निरास ॥
सुकवि गणक मन दए एहो भान ।
नारद - वचन करिअ अनुमान ॥

(धात्र शः पुनरागत्य प्रवेशं नाटयति ।)

धात्र शः – (परिकम्यावलोक्य च) अहो ! शिव शिव !! कथमियमवस्था ?

देवकी—(ससम्भ्रमं प्रणिपत्य गीतेन कथयति)

(करुणा मालव-रागे गीतम्--७)

मुनि हे ! कि हमे करब परकारे ।
चिन्ता-जलधि मगन मोर मानस,
कओन परि होएत सँतारे[३९] ॥

विशाल । कलेस = दुःख । निमगन = निमग्न (डूबल) । अचिर = जल्दी । तरान = रक्षा । निकरुन = निर्दय (कंस) । सञ्चिअ = संचित कए, पोसि । उतपति = जन्म ॥

(नारद फेर आबि प्रवेशक अभिनय करैत छथि ।)

नारद – (टहलि ओ देखि) अहो ! हाय हाय !! कोना एहन दशा भए गेल ?

देवकी—(हड़बड़ाए प्रणामक हेतु खसि गीतद्वारा कहैत छथि) --

(करुणा मालवराग मे गीत—७)

परकारे = उपाय । चिन्ता-जलधि = चिन्तारूपी समुद्र मे हमर मन डूबल

---

३९ - सँताये ।

जुग सम जामिनि कठिन गमाविअ,
के जन कएल कत पापे।
एहनि करमहिनि हमे सनि के थनि,
जे सह एतेक सन्तापे॥
तोहे नारद मुनि, हमे निरविध गुनि,
कहिअ तेहन उपदेशे।
जाहि तह सँतरिअ अचिर दुगह दुख,
न रह कलेसक लेसे॥
दूषन बीनु हमरि एहु दुर्गति,
कतेक सहब दुखभारे।
[40]तनय-हरन तह मरन नीक थिक,
[41]ई बुझि करिअ परकारे॥
सुकवि भणक भन, धर धैरज मन,
सब दिन न रह समाने।
नारद-वचन धरिअ गुन-मानस,
जे भल देखत निदाने॥

धार्वशः—देवकि! मा सीद। महान् उपायोऽस्ति। तच्छृणु—

अछि। सँतारे = उद्धार। जामिनि = राति। के जन = गर्भ मे कोन पापी व्यक्ति अछि। करमहिनि = अभागलि। निरविध = असहाय। सँतरिअ = पार होइ। अचिर = जल्दी। कलेसक लेसे = दुःखक लेशो नहि रहए। दूषन बीनु = बिनु दोषें। तनय-हरन तह = पुत्रक हरण सँ। निदाने = उचित प्रतीकार॥

नारद—देवकी! दुख जनु करी। एकर पैघ उपाय अछि। से सुनू—

[40] तनय हरब त हमर न नीक थिक। [41] ई बुझि।

कहल नारद देवकी सुनु, आन नहि परकार ओ।
धरह दृढ़ हरिचरण सरण, सँतार तेहि दुखभार ओ॥७॥
(इत्युक्त्वा प्रचलितः।)
(प्रस्तावना समाप्त)

(ततो वसुदेवो देवकी च हृदि विमृश्य हरिचिन्तने चित्तं निवेश्य गीतेन कथयतः[42]।)

(आसावरी-रागे गीतम्—८)

मन अनुचिन्त देवकि वसुदेव।
दृढ़तर भगति दामोदर सेव॥
दुख सागर सँ करिअ उद्धार।
तोहें सन जगतक कओन कड़हार॥
परल पराभव रचिअ उपाए।
चिन्तामनि अनुगत चित लाए॥
करुणामय जनु होइअ भोर।
सब तेजि सरण धएल हमे तोर॥
जातक-हरन सहल नहि जाए।
देखि दुख दरबरि होइअ सहाए॥

हे देवकी! दोसर उपाय नहि अछि। अहाँ कृष्णक चरणकेँ कसिकए गहू, जे दुःखक भार सँ पार करत॥७॥

(ई कहि चलि देलनि।)

[प्रस्तावना समाप्त]

(तखन वसुदेव ओ देवकी मन मे विचारि श्रीकृष्णक चिन्तन मे मनकें लगाए गीतक द्वारा कहैत छथि)—

(आसावरी-रागमे गीत—८)

अनुचिन्त = ध्यान करैत छथि। दृढ़तर = अधिक निश्चितरूपें। दामोदर = कृष्णक। कड़हार = कर्णधार, खेवैया। पराभव = दुःख मे। चिन्ता-

[42] कथयति।

सुकवि गणक मन दए एहो गाव।
भगति जगत गति कि नहि पाव॥

(ततः श्रीकृष्णः करुणया गरुडस्थः समागतः।)

(देशाख-रागे गीतम्--६)

देल गरुडासन प्रभु परवेसे।
अगत भगत--जन सूनि कलेसे॥
पीत वसन तनु उपज सिनेहे।
सजल जलद जनि दामिनि रेहे॥
करतल शङ्ख एहन सन भासे।
पङ्कज पर इन्दु कएल निवासे॥
पदम पानि देखि होअ मन भाने।
पङ्कज सौं पङ्कज निरमाने॥
सुकवि गणक नहि संशय आने।
हिनि तह अचिरहि होएत तराने॥

(ततो देवकी माधवमवलोक्य प्रदक्षिणं कृत्वा प्रोक्तवती।)

देवकी—भो! त्रैलोक्यनाथ! मयि[43] प्रसीद। नान्यः प्रकारः।

मति = चिन्ता सौं भरल। अनुगत = भक्त। भोर = अज्ञानी। जातकहरन = पुत्रक हरण। दरबरि = झटपट॥

(तखन श्रीकृष्ण दयापूर्वक गरुड पर चढ़ल आबि गेलाह।)

(देशाख-राग मे गीत—६)

गरुडासन = कृष्ण। पीत वसन = पीयर वस्त्र। सजल.................. = पानि सौं भरल मेघ मे जेना बिजलोकाक रेखा रहए। इन्दु = चन्द्रमा। पदम = कमल। पानि = हाथ मे। पङ्कज = कमल सौं कमल बहराइत हो। हिनि तह = हिनकहि सौं। अचिरहि = अविलम्ब। तराने = रक्षा॥

(तखन देवकी कृष्णकेँ देखि प्रदक्षिण कए कहलथिन)—

देवकी—हे तीनूलोकक मालिक! हमरा पर प्रसन्न होउ। दोसर उपाय नहि अछि।

43—मां।

(तेनाऽनन्तरं नारायणेनोक्तं पद्येन[44]।)

श्रीकृष्णः—

मातः! खेदमपाकुरु प्रतिपलं मच्चिन्तने सादरं
चेतस्त्वं विनिधेहि शासनगृहे [45]दोषास्त्वमङ्गीकुरु।
[46]यावत् त्वज्जठरे विशामि शनकैः प्रोद्भूय नन्दालयं
नीत्वा शैशवमाचरामि सहसा कंसाधमोत्सारणम्॥६॥

(इति श्रुत्वा देवकी साश्रु कथयति।)

देवकी—प्रभो! मज्जठरे निवासं कदा करिष्यसि?

श्रीकृष्णः—(विहस्य गद्येन) मातः! तव गर्भतो बलभद्रावतारोऽहमेव प्रथमं योगनिद्राव्यपदेशेन रोहिणी-गर्भमाविशन् सङ्कर्षणपदमालप्स्ये[47], ततोऽष्टमे गर्भे अहमप्यागमिष्यामीति। इति सत्यं जानीहि। चिन्तां दूरीकृत्य तावत् कारागारे वासमङ्गीकुरु।(इति निष्क्रान्तः।)

(तच्छ्रुत्वा देवकी समुल्लसितहृदया तूष्णीं बभूव।)

(तखन श्रीकृष्ण पद्यद्वारा कहलथिन।)

श्रीकृष्ण—हे माए! अहाँ दुख दूर करू, हरदम आदरपूर्वक हमर चिन्तन मे मनकेँ लगाउ ओ एहि जहल मे राति सभ केँ बिताउ यावत् धरि हम अहाँक पेटमे पैसैत छी, उत्पन्न भए नन्दक घर जाए, बचपन बिताए सहसा पापी कंसक नाश करैत छी॥६॥

(ई सुनि देवकी आश्वस्त भए कहैत छथि।)

देवकी—हे प्रभु! अहाँ हमरा पेट मे कहिआ निवास करब?

श्रीकृष्ण—(हँसि गद्यक द्वारा) हे माए! अहाँक गर्भ सौं बलभद्रक अवतार लए हमहीं पहिने योगनिद्राक ब्याजेँ रोहिणीक गर्भ मे पैसि सङ्कर्षण कहाए, तखन आठम गर्भ मे स्वयं हम आएब। ई सत्य जानू। चिन्ता दूर कए तावत् जहल मे वास करू। (बहार भए गेलाह।)

(ई सुनि देवकी उल्लासयुक्त हृदय भए चुप भए गेलीह।)

44—पद्येन कथयति। 45—दोषस्त्व। 46—त्वज्जठरे मा(?) विशामि। 47—पदमालप्स्य।

(अथ छन्दः)

भगति रति मति, कएल दृढ़ गति, हरिचरण धरि आस ओ ।
लेल सारङ्गपानि मन गुनि, आए गर्भ निवास ओ ॥
[४८]छुटल चिन्ता छीन-तनुगत जुटल हृदय हुलास ओ ।
[४९]गर्भ समुचित भइए किछु दिन, पुरल पूरन मास ओ ॥७॥

(अथ गीतम्-- १०)

भगति कएल दृढ़ ज्ञाने ।
मन बुझि गति नहि आने ॥
बादल मानस आसे ।
हरि लेल गर्भ–निवासे ॥
पसरल हृदय हुलासे ।
पूरल पूरन मासे ॥
नभस सुदीवस भेला ।
देवकि वेदन लेला ॥
सुकवि गणक इह भाने ।
तखनुक समय बखाने ॥

(छन्द)

रति = अनुराग । दृढ़ गति = स्थिर रीति । सारंगपानि = श्रीकृष्ण । छीन-तनुगात = दुर्बल शरीर मे स्थित । हुलास = उल्लास । पूरन = पूर्ण ॥७॥

(गीतसं०—१०)

हरि = कृष्ण । पूरनमासे = पूर्णमास, दशम मास । नभस सुदीवस = बरसातक सुन्दर दिन । वेदन = प्रसववेदना ॥

४८—छुटल छिन छीन तनुगत । ४९ – सगर्भ ।

(अथ प्रसवकाल-वर्णनम्)

निबिड़ नभ संघट्ट युत घन, घोर गरज सदर्प ओ ।
वलित दलित अँधार[५०] चहुदिश, तलित दपि तरप्प ओ ॥
झिङ्गुर झिल्ली रव विभीषम, अधिक दादुल सोर ओ ।
त्रास [५१]तहु न चोर संचर, मोर शबद अनोर ओ ॥८॥

अथ गीतम्--११

नभ गरजए घन घोरे ।
मोरक शबद अनोरे ॥
रइनि महा भर भीमा ।
आदि अँधारक सीमा ॥
बरिसए बारिद धारा ।
एहि पूरित महि सारा ॥
भेक झिंगुर कर गाने ।
योगिनि –निकर भयाने ॥
सुकवि गणक इह गाई ।
एहि अवतरल कन्हाई ॥

(प्रसवकालक वर्णन)

निबिड़ = सघन । नभ = आकाश मे । संघट्ट = टक्कर । घन = मेघ । घोर = अतिशय । सदर्प = दर्प सहित । वलित = सहित । दलित = पसरल । तलित = बिजलोका । रव = शब्द । विभीषम = भयानक । दादुल = बेङ । त्रास = डरेँ । मोर शब्द = मयूर बजैछ । अनोर = अनुपम ॥८॥

(गीत – ११)

नभ = आकाश मे । रइनि = राति । भीमा = भयानक । बारिद = मेघ । महिसारा = सम्पूर्ण पृथ्वी । भेक = बेङ । योगिनिनिकर = योगिनीक समूह ॥

५०—अँधकार

(अथोत्पत्तिकालवर्णनम्)

योग शोभन रोहिणीयुत, लग्न उत्तम कर्क ओ ।
[51]ताहु सुरगुरु, स्वगृह शशधर, चारु दोसर अर्क ओ ॥
मास नभ—वसु तीथि अष्टमि, कृष्णपक्ष विशाल ओ ।
देवकी कौं तनय भए अवतरल श्रीगोपाल ओ ॥9॥

(अथ गीतम्-- १२)

हरि हेरि दुख दुरि गेला ।
पुलकित मानस भेला ॥
[52]फुजल बन्धन दृढ़ डोरे ।
मन्दिर भेल इजोरे[53] ॥
कर जोरि कहलन्हि जाई ।
समरिथ सबय मधाई ॥
जानि पाओत जओं तोही ।
धाओत अरि निरमोही ॥
करें गहि अङ्कम लेला ।
साहस परिनत भेला ॥
सुकवि गणक इह भाने ।
हिनि छाड़ि गति नहि आने ॥

(आब उत्पत्तिकालक वर्णन)

शोभन = शोभन नामक योग । रोहिणी नक्षत्र सँ युक्त । सुरगुरु = बृहस्पति । स्वगृह = अपना घर मे (कुण्डली मे निर्धारित घर मे)। शशधर = चन्द्रमा । चारु = सुन्दर । अर्क = सूर्य । नभवसु = भादव ॥९॥

(गीत —१२)

हेरि = देखि । पुलकित = प्रसन्न । दृढ़ डोरे = मजबूत डोरी । मन्दिर = घर । समरिथ = समर्थ । मधाई = कृष्ण । अरि = शत्रु । करें = हाथ सँ । अङ्कम = कोरा मे । साहस = उत्साह ॥

५१—तहुँ सुरगुरु, स्वगृह शशिधर । ५२—फूजल । ५३—ऊजोरे ।

श्रीकृष्णः—(एतच्छ्रुत्वा स्वरूपसंहरणं चकार ।) प्रोक्तं च लभ्यते । मां नीत्वा नन्दालये संस्थाप्य, कन्यकां गृहीत्वा सानुसारमागच्छ ।

(वसुदेवस्तथा करोति ।)

थार धरि हरि कएल कर पर, पुरल अधिक [54]जलौघ ओ ।
[55]उपर अहिपति भोग पसरल, न होअ तनु जलजोग ओ ॥10॥

(अथ गीतम् — १३)

खुलले पाओल दुआरे ।
सएन मगन प्रतिहारे ॥
तपन—सुता भेलि थाहे ।
[56]पसर गगन निरवाहे ॥
चलें चलें हरि धरि देला ।
तसु तनया गहि लेला ॥
[57]ककरहु नहि भेल जाने ।
बसुदेव कएल पयाने ॥

श्रीकृष्ण —(ई सुनि अपन रूप समेटि लेल) जे हम कहने छलहुँ, से आब अहाँ पाबि रहल छी । हमरा लए नन्दक घर मे राखि, ओतए सँ कन्या लए हमर कहलक अनुसारेँ आबि जाउ ।

(वसुदेव तहिना करैत छथि ।)

कृष्णकेँ थार मे राखि, हाथ मे लए विदा भेलाह, अत्यधिक मेघ उमड़ि आएल, ऊपर मे शेषनाग अपन फण पसारि देल, तेँ वर्षाक जलक स्पर्शो तक नहि भेलनि ।१०॥

(गीत—१३)

सएन = सुतवा मे । प्रतिहारे = द्वारपाल । तपनसुता = यमुना । निरवाहे = मेघ । तसु तनया = हुनक पुत्रीकेँ । पयाने = प्रस्थान । देविहि

५४ - जमोल (?) । ५५ - उर अहिपति । ५६ - पसरल । ५७ - ककरहुँ ।

देवकि देविहि देला ।
मुदित मानस [तब] भेला ॥
पसरल सेहु परिपाटे ।
मुन्दित भेल कपाटे ॥
रोदन मन अनुमानी ।
जागल जामिनि जानी ॥
सुकवि भणक इह भाने ।
परिनत भेल धेआने ॥

(अथ छन्दः)

धाए रक्षक पाट लाओल, सुनिअ प्रभु नृपराज ओ ।
देवकी-गृह शिशुक रोदन सुनल अछि हमे आज ओ ॥11॥

(इति श्रुत्वा कंसासुरः सोल्लासम्[58] उक्तवान् ।)

कंसासुरः—तर्हि सिद्धं नः समीहितम् । (इति[59] ससम्भ्रमम् उत्थाय प्रचलितः ।)

(अथ छन्दः)

गमन-भर भूखण्ड[60]-मण्डल, डोल भूधर गात ओ ।
भेल अति निर्घात चौदिस, होत उल्कापात ओ ॥

=देवीरूपा कन्या । पसरल=पूर्ववत् सभ किछु पसरिगेल । मुन्दित=बन्द । कपाट=केवाड़ । जामिनि जानी=पहरूदार ।

रक्षक दौड़ि राजद्वार पहुँचल ओ बाजल—हे राजा ! देवकीक घर मे आइ हम बच्चाक कानब सुनल अछि ॥११॥

(ई सुनि कंस उल्लासपूर्वक बजलाह ।)

कंस—तखन त हमरालोकनिक अभीष्ट सिद्ध भए गेल । (हरबड़ाए उठि चलि देलनि ।)

(छन्द)

गमन-भर=चलबाक भार सँ । भूधर गात=पहाड़क अङ्ग । निर्घात

५८ - सोल्लासः उक्तं च तर्हि । ५९ - स ससंभ्रमोत्थाय । ६० - भूखण्ड मण्डल।

मोद मत्त सुरारि अतिबल, रोसेँ चलु पथ धाए ओ ।
दर्प दर्पित कंस निर्दय, देवकी-गृह जाए ओ ॥12॥

(देवकी ससम्भ्रमम् उत्थाय कंसासुरचरणे प्रणिपत्य गीतेन कथयति—)

(गीतम्—१४)

हे दादा ! न करहु मोर निदाने ॥ध्रु०॥
जतन आस जत अङ्कुर अङ्कुरल
भँगलहु लाए पषाने ।
कि हमे कएल तोर[61], जम सम तोहेँ मोर,
कंस ! तेजहु अगाने ॥
सन्तति हरन सहन[62] के कर बरु,
हमर अवस अवसाने ।
हमहि सताए कओन फल पओबह,
तनय देहु बरु दाने ॥
हित भए अरि सरि, काज करहु करि,
पिशुन-वचन अनुमाने ।
सेहु लिखल रहत सकर फल पाबिअ,
सगर जगत एहु जाने ॥

=भूकम्प । मोदमत्त=आनन्देँ पूर । सुरारि=दैत्य कंस । रोसेँ=क्रोध सँ । दर्प दर्पित=घमण्ड सँ भरल ॥१२॥

(देवकी हरबड़ाए उठि कंसासुरक पएर पर खसि गीतक द्वारा कहैत छथि—)

गीत—१४

दादा=भाए । निदाने=दुर्गति । जतन आस=यत्न ओ आशा सँ । भँगलहु=फोड़लहु । पषाने=पाथर पर । जम सम=यमराजक समान । सन्तति-हरण=सन्तानक हरण । अवस=निश्चय । अवसाने=अन्त, मृत्यु । अरि सरि

६१ - तोहर । ६२ - सहत के ।

जातक-शोक जेहन जननी कौं,
ताहि करथ अनुमाने ।
अपने अओं उनमाद भरल छह,
पूछि देखह वरु आने ॥
माया मोह तोहें सभ तेजलह,
ठामहि रहत गुमाने ।
[63]निरदय हिरदय उपज दया नहि,
सुकवि गणक इह भाने ॥

(तथापि कंसासुरः सक्रोधं प्रचलितः ।)

(अथ गीतम् – १५)

कंस भवन धसि गेला ।
सभ मन शंकित भेला ॥
मद मातल अगेआनी ।
करतल धएल भवानी ॥
[64]झट अलोपल तेजि पानी ।
सुनल गगन निरवानी ॥
कि करह कंस गुमाने ।
भेल आन सौं आने ॥
से अवतरलह आजे ।
जे करत तोहर इलाजे ॥

=शत्रु क सदृश । पिशुन = चुगला, दुष्ट । जातकशोक = पुत्रशोक । उनमाद = मानसिक असन्तुलन । हिरदय = हृदय मे ।

(तैयो कंसासुर क्रोधपूर्वक चलि देलनि ।)

(गीत—१५)

अगेआनी = अज्ञानी । करतल = हाथ मे । भवानी = यशोदाक पुत्रीरूप भगवतीकें । झट अलोपल = तुरत लुप्त भेलीहि भगवती । तेजि पानी = कंसक

६३ · निरदए हृदए तंअओ दया नहि । ६४ · हट

मूढ़ विकल पुनि भेला ।
लाज लम्बित फिरि गेला ॥
अनुचित कएल विचारे ।
विहि सओं नहि परकारे ॥
गणक भनए मन लाई ।
नन्द—घर बाजु बधाई ॥

(नन्दालये यशोदा-किशोरमालोक्य गोप ङ्गना समुल्लसित-हृदया गीतेन कथयति—)

सोहर गीतम् – १६

पद—१ · हरि यदुनाथ यशोमति, अङ्कम लाओल रे ।
ललना, जनि पथ पड़ल परसमनि, निरधन पाओल रे ॥
छन्द— धन पाए निरधन, मगन मन, आनन्द उर[65] न समाए ओ ।
कए हरख मन, गन्धर्व-गन, अवतरओ यदुवर जाय ओ ॥
पद—२ · पय लए तोरित यशोमति, तनय नहाओल रे ।
ललना, सुनि नन्द दगरिनि सहित, धाए गृह आएल रे ॥

हाथ सौं छुटिकें । गगन निरवानी = आकाशवाणी । इलाजे = प्रतीकार । मूढ़ = मूर्ख कंस । विहि सओं = । । सौं ॥

(नन्दक घर मे यशोदाक पुत्रकें देखि गोपीसभ उत्साह सौं भरल हृदय-वाली गीतक द्वारा कहैत छथि—)

(सोहर गीत—१६)

पद—१ · यदुवंशक नाथ श्रीकृष्णकें यशोदा कोर मे लेलनि, जेना बाट पथ पड़ल स्पर्शमणिकें निर्धन व्यक्ति पाबि गेल हो। उर = छाती मे । गन्धर्व = देवताक गायक ।
पद—२ · पय = दूध । तनय = पुत्र । दगरिनि = चमैनि । यदुवंशक्षीरसमुद्र = यदुवंशरूपी दूधक समुद्र सौं ।

६५ · उर समाए ।

छन्द ... गृह आए नन्द आनन्द भेल [६६]सुत, मोहि आनन्दकन्द ओ ।
यदुवंश-क्षीरसमुद्र सओं जनि, प्रकट दोसर चन्द ओ ॥

पद – ३ - नार-छिनाउनि दगरिनि, पाओल मोहर रे ।
ललना, जुगे जुगे जाबओ यशोमति, बालक तोहर रे ॥

छन्द — तोहर यशोमति तनय अनुपम, देखिअ जदुकुलराज ओ ।
अति उधव धाय हुलास गोकुल, द्वार दुन्दुभि बाज ओ ॥

पद – ४ - सुर नर मुनिगन हरखित, जय जय शबद भयो रे ।
ललना, कंसदलन कहु नन्द-घर हरि अवतार लयो रे ॥

छन्द— अवतार लए हरि हरओ दारिद, दुःख शोक सन्ताप ओ ।
[६७]उतपन्न भए उद्योग कए प्रभु, चौदिग वलित प्रताप ओ ॥

पद – ५ - घर घर ग्वलिनि-गन मिलि, सोहर गाओल रे ।
ललना, हय गज मनि मानिक पट नट भट पाओल रे ॥

छन्द — पट पाए नट भट कोटि कीन्हु, लक्ष लक्ष सुरक्ष ओ ।
नन्दक याचक जगत दारिद, दारि कीन्हो दक्ष ओ ॥

पद ६ - कोटि कोटि याचक-जन, [६८]आओर गुनिगन रे ।
ललना, शुभ शुभ शुभ धुनि सोहर सुकवि लाल भन रे ॥

छन्द — भन लाल कइए बेहाल गोकुल, भेल सकल सनाथ ओ ।
तुअ तुङ्ग पुण्य प्रसाद बालक, भेल त्रिभुवन-नाथ ओ ॥

पद – ३ - नारछिनाउनि = बच्चाक ढोंढीक नाल कटनिहारि । मोहर = टाका ।
अनुपम = अतुलनीय । दुन्दुभि = बाजा ॥

पद—४ - सुर नर = देवता ओ मनुष्य । शबद = शब्द । कंसदलन = कंसकें मारनिहार । हरि = कृष्ण । दारिद = गरीबी । उतपन्न भए = जन्म लए । चौदिग वलित = चारू दिस चमकैत ॥

पद—५ - हय = घोड़ा । गज = हाथी । पट = वस्त्र । नट भट = नटुआ ओ वीर सभ । याचक = मङनिहारक दरिद्रता केँ दूर करबा मे पटु ।

पद—६ - बेहाल = आनन्दमग्न । तुङ्ग पुण्य प्रसाद = अतिशय पुण्यक कृपा सँ ।

---

६६ - औ सुत । ६७ - ललना उतपन्न भए उद्योग कए चौदिगावलित प्रताप ओ ।
६८ - ओ गुनिगन रे ।

(द्वितीय-सोहर-गीतम् – १७)

[६९]निज जन गन शुभकारक, गोकुल-तारक रे ।
जनमल जगत उधारक, [७०]अरु प्रतिपालक रे ॥ललना ध्रु०॥
नन्द-घर उधव धावए, सभ मिलि गावए रे ।
व्रजरानी शुभ गावए, लाखनि पावए रे ॥
नट भट पट कर करखित, सुर[७१] नर हरखित रे ।
यदुकुल होअ फुल बरखित, अति आमरखित रे ॥
आज नन्दक पुर छाजए, चहुदिस[७२] जय जय रे ।
यशोमति कोर हरि[७३] राजए, दुन्दुभि बाजए रे ॥
हरि हेरि यशोमति मन जनि, पाओल परसमनि रे ।
सुकवि लाल कह [७४]रभसनि, निजपति देखलनि रे ॥

येनेन्द्रादि-समस्त-दैवतगणाः सन्तोषिताः सर्वदा,
[७५]यो गोवर्द्धन-धारको .... ।
....
[७६]नन्दानन्द-विवर्धनो मधुरिपु[७७] र्दद्याच्छिवं श्रेयसे ॥७॥

(द्वितीय सोहर गीत – १७)

निजजन गन = अपना लोक सभक । तारक = उद्धार कएनिहार । भट = वीर । पट कर करखित = वस्त्रकें हाथसँ विचलान(पओलनि)। सुर = देवता । आमरखित = आनन्दमग्न । राजए = शोभित होइत छथि । दुन्दुभि = बाजा । परसमनि = स्पर्शमणि (पारस) । रभसनि = धोघ्रता सँ ॥

जे सदिखन इन्द्र आदि देवतालोकनिकें सन्तुष्ट कएल, जे गोवर्द्धन पर्वत कें धारण कएल,... ... ...
... ...
नन्दगोपक आनन्दकें बढ़ओनिहार, मधुदैत्यक शत्रु (भगवान् कृष्ण) अहुँलोकनिक अभ्युदयक हेतु कल्याण देथु ॥७॥

---

६९ - निज गनजन शुभकार गोकुल । ७० - उधार करिअ प्रतिपालक रे ।
७१ - सुर नर मुनि हरखित रे । ७२ - चहुदिश य य रे । ७३ - हरि राए । ७४ - रभस निज पति । ७५ - को । ७६ - (रिक्त स्थान नहि छोड़ल अछि ओ अगिला पाँती[७६] श्लोक युक्त भेल अछि ।) ७७ - रिपुर्द्धद्याच्छिवं ।

(अमङ्गल-निवारणार्थं पूतना-शकट-यमार्जुन-केशी-काली-कुवलयापीड़-चाणूर-मुष्टिक-प्रभृति-कांसवधोऽ॰॰सन्दर्शितः ।)

रचितं जन्मरहस्यं गणकाधिपेन रामरसिकेन ।
भवतु सुखाय जनानां सदसि सदा नृत्यकालेषु ॥८॥

इति श्री झडुला प्रसिद्ध श्रीकान्त-विरचितं श्रीकृष्णजन्मरहस्यं समाप्तम् ॥

(अमङ्गल सँ बचएबाक हेतु पूतना, शकटासुर, यमलार्जुन, केशी, कालीनाग, कुवलयापीड़ हाथी, चाणूर पहलमान, मुष्टिक पहलमान इत्यादि सहित कंसक वध नहि देखाओल गेल ।)

महान् ज्योतिषी (गणकाधिप), भगवान् रामक रसिक एहि जन्मरहस्यक रचना कएल । ई कृति सभा मे नृत्यक समय मे सतत लोकसभक सुखक हेतु रहओ ॥८॥

इति श्रीझड़ुला प्रसिद्ध श्रीकान्तक बनाओल श्रीकृष्णजन्मरहस्य नाटक समाप्त भेल ॥

---

७८ • वधो संमूच्छित ।

